

प्रकाशक

शिव संस्कृत संस्थान

प्राचीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के प्रकाशक तथा वितरक
(दौलतपुर) पाण्डेयपुर, वाराणसी

प्राप्ति स्थान

विश्वभारंती संस्कृत संस्थान

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, पूर्वी गेट के सामने)
जगतगंज, वाराणसी- २२१००२

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण : प्रथम

सन् : १९९९

अक्षर कम्पोजिंग

दीक्षित कम्प्यूटर

मुद्रक :

योगेश मुद्रणालय, वाराणसी



श्री गणेशाय नमः

होडाचक्रम्

ज्ञानेश्वरी हिन्दी टीका सहितम्

नत्वा देवीं सरस्वतीं विध्वंशं च सुखास्पदम् ।

संगृह्य चान्यग्रन्थेभ्यो होडाचक्रं विवृण्महे ॥

ज्ञानेश्वरी:- सरस्वती देवी और सुख के स्थान गणेश जी को नमस्कार करके
अन्य ग्रंथों से संग्रह करके होडाचक्र को बनाता हूँ ।

अयन-ज्ञान

भानोर्मकरसंक्रान्तेः षणमासा उत्तरायणम् ।

कर्कादेस्तु तथैव स्यात् षणमासा दक्षिणायनम् ॥

ज्ञानेश्वरी:- रवि मकर संक्रान्ति से ६ राशि अर्थात् मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन पर्यन्त ६ मास का उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से ६ राशि कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु पर्यन्त ६ मास का दक्षिणायन होता है ।

नोट- वर्ष, अयन, ऋतु, युग का मान सूर्य के मास से होता है, मास तथा तिथि का मान चांद्रमास से होता है ।

ऋतु-ज्ञान

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षडर्तवः स्युः शिशिरोवसंतः ।

ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्वद्वेमन्तनामा कथितोऽत्रषष्ठः ॥

ज्ञानेश्वरी:- ऋतुएँ ६ होती हैं । जब सूर्य मकर और कुम्भ राशि पर रहता है तब शिशिर ऋतु, मीन और मेष में वसंत ऋतु, वृष-मिथुन राशि में ग्रीष्म ऋतु, कर्क-सिंह राशि के सूर्य में वर्षा ऋतु, कन्या-तुला राशि के सूर्य में शरद् ऋतु और वृश्चिक और धनु राशि के सूर्य में हेमन्त ऋतु होती है ।

ऋतुज्ञान-चक्र

राशि का सूर्य	ऋतु	मास
मीन, मेष	वसन्त	चैत्र, वैशाख
वृष, मिथुन	ग्रीष्म	ज्येष्ठ, आषाढ़
कर्क, सिंह	वर्षा	सावन, भादो
कन्या, तुला	शरद	क्वार, कार्तिक
वृश्चिक, धनु	हेमन्त	अग्रहन, पूष (पौष)
मकर, कुम्भ	शिशिर	माघ, फाल्गुन

मास-ज्ञान

चतुर्विधास्तु विज्ञेया मासा वर्षाश्चतैस्तथा ।
 वर्षे तु द्वादश पूर्णे वर्षमास विशेषता ॥
 सौरश्चान्द्रश्च नाक्षत्रः सावनश्च चतुर्विधः ।
 राशौ राशौ रवेर्योगात्सौरमासः प्रकीर्तितः ॥
 दर्शावधिं मासमुशन्ति चान्द्रं सौरं तथा भास्कर राशिचारात् ।
 त्रिंशद्दिन सावनसंज्ञयस्या नाक्षत्रमिन्दोर्भगणभ्रमाच्च ॥
 विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनः स्मृतः ।
 वार्षिके पितृ कार्ये च मासश्चान्द्रोऽभिधीयते ॥

ज्ञानेश्वरी:- मास चार प्रकार के होते हैं और बारह मासों के पूर्ण हो जाने पर उनके वर्ष होते हैं । प्रथम सौर मास, द्वितीय चान्द्रमास, तृतीय नाक्षत्र मास और चतुर्थ सावन मास होता है । प्रत्येक राशि में सूर्य के जाने से सौरमास होता है । अमावस्या से अमावस्या तक चान्द्रमास और सूर्योदय से सूर्योदय तक एक सावन दिन होता है । ऐसे तीस सावन दिन का एक सावनमास और चन्द्रमा को बारह राशि को भोगने के समय को नाक्षत्रमास कहते हैं । विवाहादि में सौरमास, यज्ञादि में सावनमास और पितृकार्य में चान्द्रमास लेना चाहिये ॥

अधिमास-क्षयमास

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः
 स्याद्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।

क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः
 स्यात्तदावर्षमध्येऽधिमासद्वयं स्यात् ॥

ज्ञानेश्वरी:- जिस चन्द्रमास में स्पष्ट सूर्य की संक्रान्ति न हो उसे अधिक मास या मलमास कहते हैं और जिस मास में स्पष्ट सूर्य की दो संक्रान्ति, होती है उसे क्षयमास कहते हैं । यह क्षयमास मार्गशीर्ष-पौष और माघमास में ही होता है और उस वर्ष दो अधिक मास होते हैं ।

पक्ष-ज्ञान

सूर्येन्दुसङ्गमस्यैव विश्लेषसमयाद्बुधै ।
 शुक्लक्षोऽथराकांतस्तदग्रे कृष्णपक्षकः ॥

ज्ञानेश्वरी:- प्रत्येक मास में दो पक्ष होते हैं । सूर्य-चन्द्रमा का समागम अमावस्या को होता है । उसके बाद पूर्णिमा तक पन्द्रह दिन का शुक्लपक्ष होता है । इसके बाद अमावस्या तक पन्द्रह दिन का कृष्णपक्ष होता है ।

तिथि-परिभाषा

अर्काद्विनिसृतः प्राची यद्यात्यहरहः शशी ।
 तच्चान्द्रमासमंशैस्तु ज्ञेया द्वादशभिस्तिथिः ॥

ज्ञानेश्वरी:- अमावस्या को सूर्य के साथ चन्द्रमा योग करके पूर्वदिशा को जाता है । जब ३० तिथि अर्थात् ३६० अंश घूम लेता है तो फिर रवि से योग करता है अर्थात् अमावस्या को, इसी को चन्द्रमास कहते हैं । रवि चन्द्रमा का अन्तर १२ अंश का होता है तो एक तिथि होती है ।

प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीयातदनन्तरम् ।
 चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा ॥
 नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशीततः ।
 त्रयोदशी ततोज्ञेया ततः प्रोक्ता चतुर्दशी ॥
 पौर्णिमा शुक्लपक्षे तु कृष्णपक्षेत्वमा स्मृता ॥

ज्ञानेश्वरी:- प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, शुक्लपक्ष, में पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष में अमावस्या ।

शुभ-अशुभ तिथियाँ

नंदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः ।

कनिष्ठ मध्येष्टफलास्तु शुक्ले कृष्णे भवन्त्युत्तमध्यहीनाः ॥११॥

ज्ञानेश्वरी:- प्रत्येक पक्ष में प्रतिपदा से आरंभ करके क्रम से नंदा-भद्रा-जया-रिक्ता-पूर्णा तिथियों की संज्ञा होती है । जो निम्नङ्कित चित्र से स्पष्ट है ।

शुक्लपक्षे						कृष्णपक्षे					
	नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	
अशुभ	१	२	३	४	५	१	२	३	४	५	शुभ
मध्यम	६	७	८	९	१०	६	७	८	९	१०	मध्यम
शुभ	११	१२	१३	१४	१५	११	१२	१३	१४	१५	अशुभ

तिथि-त्याज्यकर्म

षष्ठत्रयीभूतविधुक्षयेषु नो सेवेत ना तैलपलेक्षुरंरतम् ।

नाभ्यंजनं विश्वदशद्विकेतिथौ धात्रीफलैस्नानममाद्रिगोष्वसत् ॥

ज्ञानेश्वरी:- दोनों पक्ष की षष्ठी तिथि को तैल, अष्टमी को मांस, चतुर्दशी को हजामत (बाल बनवाना) और अमावस्या को स्त्रीप्रसंग न करे । त्रयोदशी, दशमी और द्वितीया को उबटन (सरसों पीसकर) न लगावे और अमावस्या, सप्तमी और नवमी तिथि को आँवला लगाकर स्नान न करें ।

अवम-त्रिस्पृक् तिथि

यत्रैकः स्पृशति तिथिद्वयावसानं वारश्चेदवमदिनं तदुक्तमाद्यैः ।

यः स्पर्शाद्भवति तिथित्रयस्यचा हनां त्रिद्युस्पृक्पुनरिदं द्वयंचनेष्टम् ॥

ज्ञानेश्वरी:- जब एक ही बार में दो तिथियों का अन्त हो जाता हो तो उसे अवम दिन कहते हैं । और जहाँ एक ही दिन में तीन तिथियाँ समाप्त होती हो तो उसे त्रिस्पृक् कहते हैं । ये दोनों शुभकर्म में निन्दित हैं ।

वार-नाम प्रवृत्ति

अथ सावनमानेन वाराः सदा प्रकीर्तिताः ।

ते चार्कीदययोरेव विवरे तु समाः स्मृता ॥

रविः सोमो मंगलश्च बुधो जीवः सितः शनिः ।

एतेषां नामतो वाराः सदैव कथियो पुरा ॥

ज्ञानेश्वरी:- सावन मान से अर्थात् सूर्योदय से सूर्योदय तक वार का मान होता है । रवि-चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र और शनि ये सात वारों के नाम हैं ।

शुभ-अशुभवार

शुक्रेन्दुबुधजीवानां वाराः सर्वत्र शोभनाः ।

भानुभूसुतमंदानां शुभकर्मसु केष्वपि ॥१६॥

ज्ञानेश्वरी:- सभी शुभकार्यों में शुक्रवार-चन्द्रवार-बुधवार और गुरुवार शुभ होते हैं, रवि-मंगल और शनिवार किसी-किसी शुभ कर्म में शुभद होते हैं, अन्यथा अशुभ ही होते हैं ।

नक्षत्र-नाम

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी तथा ।

मृगशीर्षस्तथार्द्रा च पुनर्वसुरतः परम् ॥

पुष्याश्लेषामघाः प्रोक्ता पूर्वा चोत्तराफाल्गुनी ।

हस्तचित्रा तथा स्वाती विशाखातदनन्तरम् ॥

अनुराधा तथा ज्येष्ठा मूलभं तु ततः परम् ।

पूर्वाषाढोत्तराषाढाऽभिजिच्च^१ श्रवणं ततः ॥

धनिष्ठा च ततो ज्ञेया गततारा ततः परम् ।

पूर्वाभाद्रपदाप्रोक्ता ततश्चोत्तर भाद्रकम् ॥

रेवती चेति भानां हि नाभानि कथितानि वै ।

सप्तविंशति संख्यानां सदसत्फल हेतवे ॥

ज्ञानेश्वरी:- १ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल,

१. ताराविचार, राशिविचार आदि में अभिजित की गणना नहीं होती है, इसलिए नक्षत्र की संख्या २७ ही प्रसिद्ध है । कहा भी है उत्तराषाढं तुर्याशः श्रुतिपंचदशांशकः । कथितं चाभिजिन्मानं पुराणागणकोत्तमैः । अर्थात् उत्तराषाढं के अन्तिम चतुर्थांश श्रवण के आदि के पंचदशांश अभिजित का मान है ।

२० पूर्वाषाढ, २१ उत्तराषाढ, २२ अभिजित, २३ श्रवण, २४ धनिष्ठा, २५ शतभिष, २६ पूर्वाभाद्रपद, २७ उत्तराभाद्रपद, २८ रेवती । ये अष्टादश नक्षत्र हैं । परन्तु उत्तराषाढ के चतुर्थ चरण और श्रवण के आदि चरण को मिलाकर अभिजित नक्षत्र हो जाता है, इसलिए नक्षत्र २७ ही माने जाते हैं ।

पुष्य नक्षत्र-प्रशंसा

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुडूनाम् ।

चन्द्रे विरूद्धेऽप्यथगोचरेऽपि सिध्यन्ति कार्याणिकृतानि पुष्य ॥

ज्ञानेश्वरी :- जिस प्रकार सभी चोपाये जानवर में सिंह बली होता है उसी प्रकार से सभी नक्षत्रों में पुष्य बली होता है । यदि गोचर में चन्द्रमा अनिष्ट भी हो तो पुष्य नक्षत्र में किया हुआ कार्य सिद्ध ही होता है ।

अबकहड चक्र

चूचेचोलाश्विनी ज्ञेया लीलूलेलो भरण्यथ ।
अइउए कृत्तिकायां ओवावीवू च रोहिणी ॥
वेवोकाकी मृगशिरः कुघड्छथार्द्रका ।
केकोहाही पुनर्वसु हूहेहोडा तु पुष्यकम् ॥
डीडूडेडो आश्लेषा मामीमूमे मघास्मृता ।
मोटाटीटू पूर्वफाल्गु टेटोपोष्युत्तरं तथा ॥
पूषणठ हस्ततारा पेपोरारी तु चित्रकम् ।
रूरेरोता स्मृता स्वाती तीतूतेतो विशाखिका ॥
नानीनूननुराधर्क्ष ज्येष्ठा नोयायियू स्मृता ।
येयोभाभी मूलतारा पूर्वाषाढा भूधाफढा ॥
भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोषाभिजिद्भवेत् ।
खिखूखेखो श्रवणभं गागीगूगे धनिष्ठिका ॥
गोसासीसू शतभिषक् सेसोदादी तु पूर्वभात् ।
दूथझज उत्रभाद्रा देदोचाची तु रेवती ॥

ज्ञानेश्वरी :- प्रत्येक नक्षत्र में चार चरण होते हैं । जैसे - चू चे चो ला अश्विनी, ली लू ले लो भरणी, अ ई उ ए कृत्तिका, ओ, वा, वी, वू रोहिणी, वे वो का की

मृगशिरा, कु घ ड छ आर्द्रा, के को हा ही पुनर्वसु, हू हे हो डा पुष्य, डी डू डे डो आश्लेषा, मा मी मू मे मघा, मो टा टी टू पूर्वाफाल्गुनी, टे टो पा पी उत्तराफाल्गुनी, पू ष ण ठ हस्त, पे पो रा री चित्रा, रू रे रो ता स्वाती, ती तू ते तो विशाखा, ना नी नू ने अनुराधा, नो या यी यू ज्येष्ठा, ये यो भा भी मूल, भू ध फ ढ पूर्वाषाढ, भे भो जा जी उत्तराषाढ, (जु जे जो खा अभिजित), खी खू खे खो श्रवण, गा गी गू गे धनिष्ठा, गो सा सी सू शतभिषा, से सो दा दी पूर्वाभाद्रपद, दू थ झ ज उत्तराभाद्रपद, दे दो चा ची रेवती ।

चरण	नक्षत्र	चरण	नक्षत्र
चू चे चो ला	अश्विनी	ली लू ले लो	भरणी
अ इ उ ए	कृत्तिका	ओ वा वी वू	रोहिणी
वे वो का की	मृगशिरः	कु घ ड छ	आर्द्रा
के को हा ही	पुनर्वसु	हु हे हो डा	पुष्य
डी डू डे डो	आश्लेषा	मा मी मू मे	मघा
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	टे टो पा पी	उत्तराफाल्गुनी
पू ष ण ठ	हस्त	पे पो रा री	चित्रा
रू रे रो ता	स्वाती	ती तू ते तो	विशाखा
ना नी नू ने	अनुराधा	नो या यी यू	ज्येष्ठा
ये यो भा भी	मूल	भू ध फ ढ	पूर्वाषाढ
भे भो जा जी	उत्तराषाढ	जू जे जो खा	अभिजित
खी खू खे खो	श्रवण	गा गी गू गे	धनिष्ठा
गो सा सी सू	शतभिषा	से सो दा दी	पूर्वाभाद्रपद
दू थ झ ज	उत्तराभाद्रपद	दे दो चा ची	रेवती

प्रयोजन

पुरुष के नाम के आदि अक्षर से उसके जन्म-नक्षत्र को जानकर उसकी राशि का ज्ञान करना । जैसे- किसी का नाम विश्वनाथ है तो उसके नाम के आदि में **वि** अक्षर है और यह अक्षर रोहिणी के तीसरे चरण में है इसलिये विश्वनाथ का जन्म रोहिणी नक्षत्र के तीसरे चरण में हुआ और इनकी राशि वृष हुई ।

अनुक्त अक्षरों में विशेष

नक्षत्रों में कहे हुये ड ज ण वर्ण के क्रम से ग ज ड अक्षरों की कल्पना

चाहिये क्योंकि नाम के आदि में ड ज ण अक्षर नहीं होते हैं ।

संयुक्ताक्षरों में विशेष

यदि नाम के आदि में संयुक्त अक्षर हो, जैसे- प्रताप तो वहाँ प्रथम अक्षर से नक्षत्र की कल्पना करना चाहिये । जैसे- प्रताप में पहला अक्षर प है अतः उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का तृतीय चरण हुआ ।

राशियों के नाम

मेषो वृषश्च मिथुनं कर्कः सिंहश्च कन्यका ।

तुला च वृश्चिकश्चैव धनुश्च मकरस्तथा ॥

कुम्भो मीनस्तथा ज्ञेया राशिर्द्वादश वै क्रमात् ।

एकैकस्मिंश्च तथा राशौ नक्षत्र चरणा नव ॥

ज्ञानेश्वरी :- मेष-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-धनु-मकर-कुम्भ और मीन ये बारह राशियाँ हैं । और एक एक राशि में नक्षत्रों के नव चरण होते हैं ।

राशिकल्पना

अश्विन्योऽथ भरण्यो कृत्तिकापादश्च कीर्त्यते मेषः ।

वृषभो कृत्तिकाशेषं रोहिण्यर्धं च मृगशिरसः ॥

मृगशिरासोऽर्धं रौद्रं पुनर्वसोश्चांशकत्रयं मिथुनम् ।

पादश्च पुनर्वसुतस्तिष्योऽश्लेषा च कर्कटः ॥

सिंहोऽथ मघाचैव पूर्वाफाल्गुनयुत्तरैकपदं भवेत् ।

उत्तराशेषपादश्च हस्तचित्रार्धं च कन्यका ॥

तुलाचित्रांत्यार्धं स्वातिपादत्रयं विशाखायाः ।

विशाखापादमेकं तु मैत्रं ज्येष्ठा च वृश्चिकः ॥

मूलं पूर्वोत्तराषाढपादमेकं धनुर्भवेत् ।

मृगस्तत्परिशेषं श्रवणः पूर्वधनिष्ठार्धम् ॥

धनिष्ठार्धं शतभिषं पूर्वापादत्रयं कुम्भः ।

मीनः भाद्रपदैकं च उत्तरा रेवती तथा ॥

ज्ञानेश्वरी :- अर्ध चक्र से स्पष्ट है ।

चरण	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला ली लू ले लो अ	अश्विनी ४, भरणी ४, कृत्तिका १ पाद	मेष
ई ऊ ए ओ वा वी वू वे वो	कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशिरा २ पाद	वृष
का की कु ष ड छ के को हा	मृगशिरा २, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ३ पाद	मिथुन
ही हु हे हो डा डी डू डे डो	पुनर्वसु १, पुष्य ४, आश्लेषा ४ पाद	कर्क
मा मी मु मे मो टा टी टू टे	मघा ४, पूर्वाफाल्गुनी ४, उत्तराफा. १ पाद	सिंह
टो पा पी पू ष ण ठ पे पो	उत्तराफा. ३, हस्त ४, चित्रा २ पाद	कन्या
रा री रु रे रो ता ती तू ते	चित्रा २, स्वाती ४, विशाखा ३ पाद	तुला
तो ना नी नू ने नो या यी यू	विशाखा १, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ४ पद	वृश्चिक
ये यो भा भी भू ध फ ढ भे	मूल ४, पूर्वाषाढ ४, उत्तराषाढ १ पाद	धनु
भो जा जी (जू जे जो खा) खी		
खू खे खो गा गी	उत्तराषाढ ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २ पाद	मकर
गू गे गो सा सी सू से सो दा	धनिष्ठा २, शतभिषा ४, पूर्वाभाद्र ३ पाद	कुम्भ
दी दू थ झ ज दे दो चा ची	पूर्वाभाद्र १, उत्तराभाद्र ४, रेवती ४ पाद	मीन

राशि पुरुष संज्ञा

पुँस्त्री क्रूराकूरौ चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाश्च ।

क्षत्रिय वैश्यक शूद्रं ब्राह्मणवर्णः क्रमादजाद्येते ॥

ज्ञानेश्वरी :- मेष राशि से क्रम से पुरुष स्त्री, क्रूर, शुभ गिनने से जितनी विषम राशियाँ हैं वे स्त्री और शुभ होती हैं । तथा मेष की चर संज्ञा, वृष की स्थिर और मिथुन की द्विस्वभाव संज्ञा होती है । इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये ।

राशि स्वामी

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।

कन्या मिथुनयासौम्यः कर्कस्याधिपतिः शशी ॥

सिंहस्याधिपतिः सूर्यः गुरु मीनधनुः स्मृतः ।

मृगकुम्भपतिः सौरिः इत्युक्तं गणकोत्तमैः ॥

ज्ञानेश्वरी :- मेष और वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल, वृष और तुला राशि के स्वामी शुक्र, कन्या और मिथुन के स्वामी बुध, कर्क के स्वामी चन्द्रमा, सिंह राशि के स्वामी सूर्य मीन, धनु राशि के स्वामी गुरु तथा मकर, कुम्भ के स्वामी शनि हैं ।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	स्वामी

योग नाम

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनाह्वयः ।
 अतिगण्डः सुकर्माख्यो धृतिः शुलोऽथ गण्डकः ॥
 वृद्धिर्धुवाख्यो व्याघातो हर्षणो वज्रसंज्ञकः ।
 सिद्धियोगो व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥
 सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रो वैधृतिः स्मृतः ।
 सप्तविंशतियोगास्ते स्वनाम फलदाः स्मृताः ॥

ज्ञानेश्वरी:- योग सत्ताईस होते हैं । विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र, वैधृति । इनका फल इनके नाम के समान ही होता है ।

करण नाम

ववाह्वयं बालव कौलवाख्यं ततो भवेत्तैतिलनामधेयम् ।
 गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्या कारणानि सप्त ॥

ज्ञानेश्वरी:- वव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि ये सात करण हैं । प्रत्येक तिथि में दो करण होते हैं ।

विष्टि (भद्रा) विचार

शुक्लेपूर्वार्धेऽष्टमीपंचदश्योः भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्धे ।
 कृष्णेऽत्यार्धे स्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वभागे सप्तमीशं भुतिथ्यो ॥

ज्ञानेश्वरी:- शुक्ल पक्ष में अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्ध में भद्रा होती है और एकादशी तथा चतुर्थी को उत्तरार्ध में भद्रा होती है । तथा कृष्णपक्ष में तृतीया और दशमी को उत्तरार्ध में तथा और सप्तमी चतुर्दशी को पूर्वार्ध में भद्रा होती है ।

भद्रा वास चक्र

शुक्लपक्ष तिथि	कृष्ण पक्ष तिथि	भद्रावास
अष्टमी-पूर्णिमा	सप्तमी-चतुर्दशी	पूर्वार्ध
चतुर्थी-एकादशी	तृतीया-दशमी	उत्तरार्ध

चन्द्र विचार

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्मान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
 तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥
 पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा ।
 सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥
 नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम् ॥
 एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेव च ॥

ज्ञानेश्वरी:- जन्मराशि पर चन्द्रमा हो तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । जन्मराशि से दूसरी राशि पर हो तो मन को सन्तोष होता है । तीसरी राशि पर हो तो धन और सम्पत्ति का लाभ, चौथे हो तो कलह होता है । पाँचवी राशि पर हो तो ज्ञान की वृद्धि होती है । छठी राशि पर हो तो उत्तम सम्पत्ति का लाभ, सातवीं राशि पर हो तो राजा से सम्मान का लाभ, आठवीं राशि पर हो तो मृत्यु-तुल्य कष्ट या मृत्यु, नवम राशि पर हो तो धर्म का लाभ, दशम राशि पर हो तो अभीष्ट की सिद्धि, ग्यारहवीं राशि पर हो तो सभी वस्तुओं का लाभ और बारहवीं राशि पर हो तो हानि होती है ।

चन्द्रवास विचार

मेघे च सिंहे धनुं पूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।
 युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥
ज्ञानेश्वरी:- अर्थ चक्र से स्पष्ट है ।

चन्द्रवासदिशा-चक्र

राशि के चन्द्र	चन्द्रवास दिशा
मेष-सिंह-धनु	पूर्व
वृष-कन्या-मकर	दक्षिण
मिथुन-तुला-कुम्भ	पश्चिम
कर्क-वृश्चिक-मीन	उत्तर

सन्मुख चन्द्र फल

सम्मुखे धन लाभः स्यादक्षिणे सुखसम्पदः ।

पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥

ज्ञानेश्वरी:- यात्रा में चन्द्रमा सामने अर्थात् जिस दिशा में जाना है उसी दिशा में हो तो धन का लाभ होता है, दाहिने हो तो सुख-सम्पत्ति का लाभ, पीछे हो तो शोक और सन्ताप तथा बायें हो तो धन की हानि होती है ।

चन्द्र वर्ण फल

अलौमेषसिंहेऽरुणो युद्धकारी सितो गोवणिककर्कटेषु प्रसिद्धिः ।

धनुर्मीनयुग्मेषु पीतः श्रीर्घटस्त्रीमृगाख्येषु कृष्णोभयं च ॥

ज्ञानेश्वरी:- मेष-सिंह-वृश्चिक के चन्द्रमा का रक्तवर्ण होता है उसमें युद्ध की संभावना होती है । वृष-कर्क-तुला के चन्द्रमा का शुक्ल वर्ण होता है । उसमें सभी कार्य सिद्ध होते हैं । मिथुन-धनु-मीन के चन्द्रमा का पीतवर्ण होता है । उसमें धन का लाभ होता है और कुम्भ-कन्या-मकर राशि के चन्द्रमा का कृष्णवर्ण भय देने वाला होता है ।

चन्द्र वर्ण चक्रम्

राशि	मेष सिंह	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या मकर	तुला	वृश्चिक	धनु	कुम्भ	मीन
दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	उत्तर
वर्ण	रक्त	शुक्ल	पीत	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	पीत	कृष्ण	कृष्ण	पीत

यात्रा वार शूल

चन्द्रे मन्दे न च प्राची न गच्छेदक्षिणं गुरौ ।

न प्रतीचीं रवौ शुक्रे बुधे भौमे न चोत्तराम् ॥

ज्ञानेश्वरी:- सोमवार-शनिवार को पूर्व दिशा में, गुरुवार को दक्षिण दिशा में, रविवार-शुक्रवार को पश्चिम दिशा में और बुध, मंगलवार को उत्तर दिशा में यात्रा न करें ।

विदिशा शूल

नाग्निकोणे गुरौ चन्द्रे नैर्ऋते नार्कशुक्रयोः ।

मारुते न कुजे गच्छेदीशाने न कुजार्कजे ॥

ज्ञानेश्वरी:- गुरुवार-सोमवार को अग्निकोण में, रविवार-शुक्रवार को नैर्ऋत्य कोण

में, भौमवार को वायुकोण में और बुधवार-शनिवार को ईशानकोण में यात्रा न करें ।

यात्रा-नक्षत्र

पुष्याश्विहस्त मैत्राणि पौष्णवैष्णवसौम्यभम् ।

वासवं सर्वादिक्ष्वासु यात्रायां शोभनान्मयी ॥

पूर्वासु त्रिषु याम्यर्क्षे ज्येष्ठायां रौद्रभोरगे ।

सर्वाशासु गते यात्रां प्राणहानिर्भविष्यति ॥

ज्ञानेश्वरी:- पुष्य-अश्विनी-अनुराधा-रेवती-श्रवण-मृगशिरा-धनिष्ठा इन नक्षत्रों में सभी दिशाओं में यात्रा उत्तम होती है । तीनों पूर्व (पूर्वाफाल्गुनी-पूर्वाषाढ़-पूर्वाभाद्रपद) भरणी-ज्येष्ठा-आर्द्रा-आश्लेषा इन नक्षत्रों में सभी दिशाओं में की हुई यात्रा प्राण-हानि करती है ।

पञ्चक-विचार

धनिष्ठा पञ्चकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे ।

त्याज्या दक्षिणदिग्यात्रा गृहाच्छादनमेव च ॥

ज्ञानेश्वरी:- धनिष्ठा से पाँच नक्षत्र को पंचक कहते हैं अर्थात् धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती इन नक्षत्रों में लकड़ी आदि का संग्रह, दक्षिण दिशा की यात्रा, शय्या का बिनना, तथा घर का छवाना त्याग देना चाहिए ।

योगिनी विचार

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।

अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥

त्रयोदश्यां पञ्चम्यां च दक्षिणस्यां शिवप्रिया ।

द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋत्यां योगिनी मता ॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां पश्चिमायां च योगिनी ।

पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु सा स्मृता ॥

दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा मता ॥

षष्ठ्याममायामैशान्यां योगिनी च सदा मता ॥

ज्ञानेश्वरी:- अर्थ चक्र से स्पष्ट है ।

योगिनी-दिशा-चक्र

दिशा	तिथि
पूर्व	प्रतिपदा-नवमी
अग्निकोण	तृतीया-एकादशी
दक्षिण	पञ्चमी-त्रयोदशी
नैऋत्य कोण	चतुर्थी-द्वादशी
पश्चिम	अष्टमी-चतुर्दशी
वायव्य	सप्तमी-पूर्णिमा
उत्तर	द्वितीया-दशमी
ईशान	षष्ठी-अमावस्या

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाञ्छितदायिनी ।

दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥

ज्ञानेश्वरी:- यात्रा में बायें योगिनी हो तो सुख होता है, पीछे हो तो अभीष्टफल को देती है । दाहिने हो तो धनहानि और सामने हो तो मृत्यु करती है ।

विवाह मास शुद्धि

माघफाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ मासाः शुभप्रदाः ।

मध्यमः कार्तिको मार्गशीर्षो वै निन्दिता परे ॥

ज्ञानेश्वरी:- माघ-फाल्गुन-वैशाख और ज्येष्ठ मास विवाह करने में उत्तम कार्तिक मार्गशीर्ष मध्यम तथा शेष मास निन्दित है ।

विवाह-नक्षत्र

हस्तोत्तरास्वाति मघानुराधाप्राजेश पौष्णोदवनैऋतेषु ।

पुत्रार्थं सौभाग्यसुज्ञानिकन्या प्राप्नोति शेषेषु च भर्तृशोकम् ॥

ज्ञानेश्वरी:- हस्त-तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद)-स्वाती-मघा-अनुराधा-रोहिणी-रेवती-मृगशिरा और मूल नक्षत्र में विवाह होने से कन्या पुत्र-धन-सौभाग्य-सुख को भोगती है, शेष नक्षत्रों में पतिशोक को प्राप्त होती है ।

विवाह हरिद्रामण्डपादि मुहूर्त

चित्राविशाखाशततारकाश्विनी ज्येष्ठाभरण्यो शिवभाच्चतुष्टयम् ।

हिक्वां प्रशस्तं फलतैलवेदिका प्रदानं मण्डन मण्डपादिकम् ॥

ज्ञानेश्वरी:- चित्रा-विशाखा-शतभिषा-अश्विनी-ज्येष्ठा-भरणी-आर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-आश्लेषा इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में फलदान-तैल-वेदिका-मोदक मण्डपादि का निर्माण श्रेष्ठ होता है ।

मण्डप मुहूर्त

युग्मे हस्ते षष्ठे हीने च पञ्च सप्ताहे स्यान्मण्डपोद्वासनं सत् ॥

ज्ञानेश्वरी:- विवाह के दिन से छठे दिन को छोड़कर शेष समदिनों में तथा पाँचवे और सातवें दिन में मण्डप का विसर्जन (गंगा-पूजन) करना शुभ होता है ।

वधूप्रवेश समय

विवाहमारभ्य वधूप्रवेशो युग्मे तिथौ षोडशवत्सरांतः ।

ऊर्ध्वं ततोऽब्देयुजि पञ्चमान्तं पुनः परस्तान्नियमो न चास्ति ॥

ज्ञानेश्वरी:- विवाह के दिन से सोलह दिन के अन्दर सम दिनों में इसके बाद विषम मास और विषम वर्ष में पांच वर्ष तक वधूप्रवेश करना चाहिये । इसके बाद कोई नियम नहीं है चाहे जब करें ।

वधूप्रवेश मुहूर्त

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्र वसुमूलमघानिले ।

वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः ॥

ज्ञानेश्वरी:- ध्रुवसंज्ञक (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद-रोहिणी) क्षिप्रसंज्ञक (हस्त-अश्विनी-पुष्य), मृदुसंज्ञक (मृगशिरा-रेवती-चित्रा-अनुराधा), श्रवण-धनिष्ठा-मूल-मघा और स्वाती इन नक्षत्रों में तथा रिक्ता तिथि (१-४-१४), भौमवार, रविवार को छोड़कर शेष तिथि और वारों में वधूप्रवेश करना चाहिये ।

नूतन वधू नूतनपाक कर्म मुहूर्त

मृगोत्तरातिष्यक्शानुशाक्रे श्रुतित्रये ब्रह्मद्विदैवपौष्णे ।

शुभे तिथौ व्यासरवौ प्रकुर्यान्नवावधू नूतनपाककर्म ॥

ज्ञानेश्वरी:- मृगशिरा-तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद)-पुष्य-कृत्तिका-ज्येष्ठा-श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा-रोहिणी-विशाखा इन नक्षत्रों में शुभ तिथि और भौम तथा रविवार को छोड़कर शेषवारों में नूतनवधू रसोई बनावें ।

द्विरागमन (दोगा) मुहूर्त

चरेदथोजहायने घटालिमेषगे रवौ

रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे ।

न्युग्ममीनकन्यका तुलावृषे विलग्नके
द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्त्रपे मृदूडुनि ॥

ज्ञानेश्वरी:- विवाह के समय से विषम वर्ष में कुम्भ-वृश्चिक-मेषराशि के सूर्य में-सूर्य-गुरु के शुद्ध रहते, शुभग्रह के दिनों में, मिथुन-मीन-कन्या-तुला और वृष लग्न में लघु संज्ञक (हस्त-अश्विनी-पुष्य) ध्रुवसंज्ञक, (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद रोहिणी) चर संज्ञक (स्वाती-पुनर्वसु-श्रवण-धनिष्ठा-शतभिष), मूल और मृदु संज्ञक (मृगशिरा-रेवती-चित्रा-अनुराधा) इन नक्षत्रों में द्विरागमन करना चाहिये ।

शुक्रास्तविचार

सार्धाष्टमासे भृगुपूर्वभागे अस्तंगते तिष्ठति पञ्चपक्षम् ।

पश्चोदये मास नवानि भुक्तः शुक्रोदशाहे उदिते च पूर्वे ॥

ज्ञानेश्वरी:- आठ महीना पन्द्रह दिन तक शुक्र पूर्व में उदित रहता है इसके बाद पूर्व में पाँच पक्ष अर्थात् दो मास पन्द्रह दिन के बाद पश्चिम में उदय होता है । पश्चिम में नौ मास तक उदित रहने के बाद पश्चिम में दस दिन तक अस्त रहकर फिर पूर्व में उदित होता है ।

गुरु अस्तोदय

गुरोरेकादशं मासमुदयं पूर्वादिग् भवेत् ।

पश्चिमास्तं मासमेकं नान्यथा मुनिरब्रवीत् ॥

ज्ञानेश्वरी:- गुरु ग्यारह मास तक पूर्व में उदित रहता है और पश्चिम में एक मास तक अस्त रहता है ।

गुरु-शुक्र अस्त में त्याज्यकर्म

अग्न्याधानं प्रतिष्ठां नरपतिगमनं चौलकर्माभिषेको

दानं गेहं च विद्याव्रतमखरचना बंधमोक्षौ विवाहम् ।

यावत्केतूदयस्थः सुरगुरुभृगुजे सूर्यलुप्तेऽधिमासे

नो कार्यं पण्डितेन श्रियमभिलषता देवतीर्थाभियानम् ॥

ज्ञानेश्वरी :- जब तक गुरु-शुक्र अस्त हो और केतु तारा का उदय हो तब तक अग्निहोत्र, देवता की प्रतिष्ठा, राज्याभिषेक, यात्रा, मुण्डन, महादान, गुरु, विद्यारम्भ, व्रतबन्ध, यज्ञ, व्रत का आरम्भ और उसका त्याग, विवाह, देवता के दर्शन और तीर्थयात्रा न करे, एवं अधिकमास में भी उक्त कार्यों को न करे ।

गण्डान्त (मूल) विचार

अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः ।

रेवतीर्षशक्रान्ते मासरुद्रसस्तथा ॥

ज्ञानेश्वरी :- अश्विनी-मघा-मूल इन नक्षत्रों के आदि में क्रम से ३-४-९ घटी अर्थात् अश्विनी के आदि में ३ घटी, मघा के आदि से ४ घटी और मूल के आदि में ९ घटी गण्डान्त (मूल) होता है । एवं रेवती के अन्त में १२ घटी, श्लेषा के अन्त में ११ घटी और ज्येष्ठा के अन्त में ६ घटी गण्डान्त (मूल) होता है । इस गण्डान्त (मूल) में उत्पन्न बालक का त्याग कर दे अथवा ६ मास तक पिता इसका मुख न देखे । शेष घटियों में जन्म हो तो २७ वें दिन फिर उसी नक्षत्र में शान्ति कर देना चाहिये ।

सूतिकास्नान मुहूर्त

पौष्णाध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूतीस्नानं समित्रभरवीज्यकुजेषु शस्तम् ।

नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूल त्वाष्ट्रेऽसौरिवसुषड्रविरिक्ततिथ्याम् ॥

ज्ञानेश्वरी :- रेवती-तीनोंउत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद) रोहिणी-मृगशिरा-हस्त-स्वाती-अश्विनी-अनुराधा इन नक्षत्रों में रवि, गुरु, भौमवार को सूतिका स्त्री को स्नान कराना चाहिये । आर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-श्रवण-मघा-भरणी-विशाखा-कृत्तिका-मूल-चित्रा इन नक्षत्रों में और बुध, शनिवार को तथा ६, ८, १२, ४, ९, १४ इन तिथियों में स्नान नहीं कराना चाहिये ।

अन्नप्राशन मुहूर्त

रिक्तां भौमं परित्यज्य विष्टिं पातं च वैधृतिम् ।

मृदुध्रुवक्षिप्रभेषु अन्नपानं हितं शिशोः ॥

ज्ञानेश्वरी :- रिक्तातिथि (४-९-१४), नन्दातिथि (१-६-११), अष्टमी-अमावस्या-द्वादशी शनि, भौम, रवि इन वारों को, जन्मराशि और जन्मलग्न से आठवीं राशि और उसका नवांश तथा मीन-मेघ और वृश्चिक लग्न को इन सभी पदार्थों को छोड़कर छठे मास से सम मास में बालकों का और पाँचवे मास से विषम मास में कन्या का तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद) रोहिणी-मृगशिरा-रेवती-चित्रा-अनुराधा-हस्त-अश्विनी-पुष्य स्वाती-पुनर्वसु-श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा इन नक्षत्रों में अन्नप्राशन (चटावन) कराना चाहिये ।

चौल (मुण्डन) मुहूर्त

पौष्णाश्वितिष्यवसुवासववासुदेव-वातार्कचन्द्रवरुणादितिचित्रभेषु ।

वारेषु सोमबुधवाक्पतिभार्गवानां क्षौरं हितं शुभफलं शुभतारकासु ॥

ज्ञानेश्वरी :- रेवती-अश्विनी-पुष्य-धनिष्ठा-ज्येष्ठा-श्रवण-स्वाती-हस्त-मृगशिरा-शतभिषा-पुनर्वसु-चित्रा इन नक्षत्रों में तथा सोम-बुध-गुरु और शुक्र इन वारों में और शुभ तारों में मुण्डन करना शुभ फलदायक होता है ।

व्रतबन्ध (उपनयन) मुहूर्त

शुक्ले पक्षे शशिदिनकरे देवपूज्ये च सम्यक्
वारे भानोः सितश्च त्रिदशपतिगुरौचोतरे तिग्मभानौ ।
हस्तश्चित्राश्विशक्रादितिवसुवरुणोपेन्द्रपुष्येन्दुपौष्णे-
स्वातीतिष्यव्याहतासु स्मृतमुपनयनं भार्गवाद्यैर्मुनीन्द्रैः ॥

ज्ञानेश्वरी :- शुक्लपक्ष में चन्द्रमा-सूर्य और गुरु अनुकूल हो ऐसे समय में रवि-शुक्र और गुरुवार को सूर्य उत्तरायण हो हस्त-चित्रा-अश्विनी-ज्येष्ठा-पुनर्वसु-धनिष्ठा-शतभिषा-श्रवण-पुष्य-मृगशिरा-रेवती-तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद)-रोहिणी-तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी-पूर्वाषाढ़-पूर्वाभाद्रपद) आर्द्रा और मूल नक्षत्र में व्रतबन्धन (उपनयन) करना चाहिये ।

अग्निवास विचार

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता गुणऽभ्रे भुवि वाहिवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मेशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

ज्ञानेश्वरी :- शुक्लपक्ष के प्रतिपदा से इष्टतिथि पर्यन्त तिथि की संख्या में एक जोड़कर उसमें रविवार से इष्टवार की संख्या को जोड़कर (चार) से भाग दे यदि (तीन) शेष बचे अथवा शून्य शेष बचे तो भूमि पर अग्नि का वास होता है । उस दिन हवन करने से सुख होता है, (एक) शेष बचे तो आकाश में, (दो) शेष बचे तो पाताल में अग्नि का वास होता है । इसमें हवन करने से प्राण और धन का नाश होता है ।

आहुति विचार

सूर्यभात्रिभिर्वा चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्कवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥

ज्ञानेश्वरी :- सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक (जिस दिन हवन करता हो) गिने तो प्रथम ३ नक्षत्र सूर्य का, इसके बाद ३ नक्षत्र बुध का, फिर ३ नक्षत्र शुक्र का, फिर ३ नक्षत्र शनि का, फिर ३ नक्षत्र मंगल का, फिर ३ नक्षत्र गुरु का, फिर ३ नक्षत्र राहु का, इसके बाद ३ नक्षत्र केतु का होता है । पापग्रह के नक्षत्र में हवन करना अशुभ होता है ।

गृहारम्भ मास विचार

सौम्य फाल्गुन वैशाख माघ श्रावण कार्तिकाः ।

मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यफलप्रदाः ॥

ज्ञानेश्वरी :- मार्गशीर्ष-फाल्गुन-वैशाख-माघ-श्रावण और कार्तिक मास में गृह आरम्भ करने से पुत्रलाभ और आरोग्यता होती है ।

गृहारम्भ नक्षत्र विचार

त्र्युतरेऽपि च रोहिण्यां पुष्ये मैत्रे करद्वये ।
धनिष्ठा द्वितये पौष्णे गेहारम्भः प्रशस्यते ॥

ज्ञानेश्वरी :- तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद)-रोहिणी-पुष्य-अनुराधा-हस्त-चित्रा-धनिष्ठा-शतभिष और रेवती इन नक्षत्रों में गृहारम्भ करना शुभ होता है ।

गृहप्रवेश के नक्षत्र

पुष्ये मैत्रे स्वात्यां ध्रुवे त्वाष्ट्रे च पूषभे ।
वासवे वारुणे शस्ते नवालयनिवेशने ॥

ज्ञानेश्वरी :- पुष्य-अनुराधा-मृगशिरा-स्वाती-उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़-उत्तराभाद्रपद-रोहिणी-चित्रा-पूर्वाषाढ़-धनिष्ठा-शतभिष इन नक्षत्रों में गृहप्रवेश करना शुभ होता है ।

विवाहे गुरुबल

वटुकन्या जन्मराशेस्त्रिकोणाय द्विसप्तगः ।
श्रेष्ठो गुरुः खषट् त्याद्ये पुजयान्यत्र निन्दितः ॥

ज्ञानेश्वरी :- वर-कन्या की जन्मराशि से ९-५-११-२-७ इन स्थानों में गुरु हो तो श्रेष्ठ होते हैं, १०-६-३-१ इन स्थानों में हो तो पूजन करने से शुभ होता है । इनसे अन्य स्थानों में हों तो निन्दित होते हैं ।

विवाहे सूर्य बल

तृतीयैकादशे षष्ठे दशमे च दिवाकरे ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥
जन्मन्यथ द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥

ज्ञानेश्वरी :- जन्मराशि से तीसरे, ग्यारहवें, छठे, दसवें स्थान में सूर्य हो तो विवाह में श्रेष्ठ होते हैं । जन्मराशि पर, दूसरे, पाँचवें, सातवें, और नवें स्थान में हों तो पूजा

करके विवाह शुभद होता है । अन्यत्र अशुभ होता है ।

ग्रहगोचर फल

धनजन्मनि पञ्चमसप्तमगा श्चतुराष्टमद्वादशधर्मयुता : ।

धनधान्यहिरण्यविनाशकराः रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ॥

ज्ञानेश्वरी :- जन्मराशि या नामराशि से २-१-५-७-४-८-१२-९ इन स्थानों में सूर्य, राहु, शनैश्चर और मंगल हो तो धन, धान्य, सुवर्ण का नाश करते हैं ।

ग्रह-राशि भोगसमय

सौरी सुंदरि सार्धमब्दयुगलं वर्ष समासगुरुः

राहुर्मासदशाष्टकं तु कथित मासं सपक्षं कुजः ।

सूर्यः शुक्रबुधास्त्रयोऽपि कथिता मासैकतुल्याग्रहा-

श्चन्द्रः पादयुतं दिद्वयमिति प्रोक्तेति राशिस्थितिः ॥

ज्ञानेश्वरी :- शनि एक राशिपर २ वर्ष ६ मास, गुरु १ वर्ष १ मास, राहु १ वर्ष ६ मास, भौम १ मास १५ दिन, सूर्य शुक्र और बुध १ मास और चन्द्रमा २ दिन १५ घटी एक राशि पर रहता है ।

ग्रहाणामेकर्क्ष भोगफलसमयादिज्ञानचक्रम्

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः/केतुः
एकर्क्ष भोग	एक मास	२१ दिन	१॥ मास	१ मास	१३ मास	१ मास	३० मास	१८ मास
फलसमय	आदौ	भान्त्ये	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये
गन्तव्यराशेः प्राक फलश	दि.५	घ.३	दि.६	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३

संक्रान्ति पुण्यकाल का विचार

पूर्वतोऽपि परतोऽपि संक्रमात्पुण्यकाल घटिकास्तु षोडश ।

अर्धरात्रिसमयादन्तरं संक्रमे परदिनं हि पुण्यदम् ॥

यदर्धरात्रमेव स्यात्सम्पूर्णं रविसंक्रमः ।

तदा दिनद्वयं पुण्यं स्नानदानादिकर्मसु ॥

ज्ञानेश्वरी :- सूर्य की संक्रान्ति जिस समय लगे उससे पहले और बाद में भी १६ घटी पुण्यकाल होता है । आधीरात के बाद संक्रान्ति लगे तो अगला दिन पुण्यकाल होता है । यदि ठीक-ठीक आधी रात को ही संक्रान्ति लगती हो तो दो दिन पुण्यकाल

होता है ।

हल प्रवहण मुहूर्त

ऋक्षेषूत्तर पौष्ण वैष्णव मघा मूलानुराधाश्विनी-

प्रजापत्यकर द्विदैवतगुरुप्रालेयपादेषु च ।

निर्दोषैर्वृषभैर्हलैश्च सुमनोमालाभिरभ्यर्चितै-

दत्त्वाक्षेत्रपतेर्वलिं हलधराः क्षेत्रं ततः कर्षयत् ॥

ज्ञानेश्वरी :- तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद)-रेवती-श्रवण-मघा-मूल-अनुराधा-अश्विनी-रोहिणी-हस्त-विशाख-पुष्य इन नक्षत्रों में हल का तथा अच्छे बैलों का पूजन कर क्षेत्रपति को बलि देकर हल से हरवाहा खेत को जोते ।

बीजवपन मुहूर्त

प्राजेशश्रवणोत्तरादितिमघा मार्तण्डतिष्याश्विनी-

पौष्णानुष्णमरीचयः शतभिषक् स्वातीविशाखा तथा ।

जीवाकेन्दुसितेन्दुनन्दनादिने लग्ने च सौम्योदये

सस्यानां वपने तथैव लवने शस्तास्तथा रोपणे ॥

ज्ञानेश्वरी :- रोहिणी-श्रवण-तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ-उत्तराभाद्रपद) पुनर्वसु-मघा-हस्त-पुष्य-अश्विनी-रेवती-मृगशिरा-शतभिष-स्वाती-विशाखा इन नक्षत्रों में और गुरु-रवि-शुक्र और बुधवार के दिन शुभ लग्न में धानों का काटना, बोना और रोपना शुभद होता है ।

नवान्नभक्षण-मुहूर्त

रेवतीश्रुति पुनर्वसु हस्तब्राह्मणः पृथगपि द्वितीये च ।

त्र्युतरेषु गदितं पृथुकानां प्राशनं नवनवान्नविधानम् ॥

ज्ञानेश्वरी :- रेवती-श्रवण-पुनर्वसु-हस्त-रोहिणी-मृगशिरा-तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ-उत्तराभाद्रपद) में नूतन (नवीन) अन्न को खाना चाहिये ।

स्वामिसेवा मुहूर्त

रोहिण्युत्तरपौष्णेषु वसुवारुणयोरपि ।

सेवेत स्वामिनं भृत्यः शुभबारोये तथा ॥

ज्ञानेश्वरी :- रोहिणी-तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ-उत्तराभाद्रपद) रेवती-धनिष्ठा-शतभिष इन नक्षत्रों में शुभग्रह के दिन में सेवक स्वामी की सेवा करे, अर्थात् नौकरी आरम्भ करे ।

इति हिन्दी टीका सहितं होडाचक्रम्

होड़ा चक्र - मेलापक विचार चक्र

चरण	नक्षत्र	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	योनिवैर	राशीशः	गण	नाडी
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि
ली लू ले लो	भरणी	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य
अ	कृतिका१	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	मेष	वानर	मंगल	राक्षस	अन्त्य
ई ऊ ए	कृतिका३	वृष	वैश्य	चतुष्पद	मेष	वानर	शुक्र	राक्षस	अन्त्य
ओ वा बी वु	रोहिणी	वृष	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	नकुल	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य
वे वो	मृग.२	वृष	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	नकुल	शुक्र	देव	मध्य
का की	मृग.२	मिथुन	शूद्र	मानव	सर्प	नकुल	बुध	देव	मध्य
कु घ ङ छ	आर्द्रा	मिथुन	शूद्र	मानव	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि
के को हा	पुन.३	मिथुन	शूद्र	मानव	मार्जार	मूषक	बुध	देव	आदि
ही	पुन.१	कर्क	विप्र	जलचर	मार्जार	मूषक	चन्द्र	देव	आदि
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	विप्र	जलचर	मेष	वानर	चन्द्र	देव	मध्य
डि डू डे डो	आश्लेषा	कर्क	विप्र	जलचर	मार्जार	मूषक	चन्द्र	राक्षस	अन्त्य
मा मी मु मे	मघा	सिंह	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	मार्जार	सूर्य	राक्षस	अन्त्य
मो टा टी टू	पू.फा.	सिंह	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	मार्जार	सूर्य	मनुष्य	मध्य
टे	उ.फा.१	सिंह	क्षत्रिय	चतुष्पद	गौ	व्याघ्र	सूर्य	मनुष्य	आदि
टो पा पी	उ.फा.३	कन्या	वैश्य	मानव	गौ	व्याघ्र	बुध	मनुष्य	आदि
पू ष ण ठ	हस्त	कन्या	वैश्य	मानव	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि
पे पो	चित्रा २	कन्या	वैश्य	मानव	व्याघ्र	गौ	बुध	राक्षस	मध्य

नक्षत्र	चरण	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	योनिवै	राशीशः	गण	नाडी
रा री	चित्रा२	तुला	शूद्र	मानव	व्याघ्र	गौ	शुक्र	राक्षस	मध्य
रु रे रो ता	स्वाती	तुला	शूद्र	मानव	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य
ती तू ते	विशाखा३	तुला	शूद्र	मानव	व्याघ्र	गौ	शुक्र	राक्षस	अन्त्य
तो	विशाखा	वृश्चिक	विप्र	कीट	व्याघ्र	गौ	मंगल	राक्षस	अन्त्य
ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक	विप्र	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य
नो या यी यू	ज्येष्ठा	वृश्चिक	विप्र	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि
ये यो भा भी	मूल	धनु	क्षत्रिय	मानव	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि
भू ध फ ढ	पू.षाढ	धनु	क्षत्रिय	चतुष्पद	वानर	मेष	गुरु	मनुष्य	मध्य
भे	उ.षाढ१	धनु	क्षत्रिय	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गुरु	मनुष्य	अन्त्य
भो जा जी (जू									
जे जो खा)	उ.षाढ३	मकर	वैश्य	चतुष्पद	नकुल	सर्प	शनि	मनुष्य	अन्त्य
खी खू खे खे	श्रवण	मकर	वैश्य	जलचर	वानर	मेष	शनि	देव	अन्त्य
गा गी	धनिष्ठा२	मकर	वैश्य	जलचर	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य
गू गे	धनिष्ठा२	कुम्भ	शूद्र	मानव	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य
गो सा सी सू	शतमिषा	कुम्भ	शूद्र	मानव	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि
से सो दा	पू.भाद्र३	कुम्भ	शूद्र	मानव	सिंह	गज	शनि	मनुष्य	आदि
दी	पू.भा.१	मीन	विप्र	जलचर	सिंह	गज	गुरु	मनुष्य	आदि
दू थ झ ज	उ.मा.	मीन	विप्र	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य
दे दो चा ची	रेवती	मीन	विप्र	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य

४ योनि गुण वर

योनि :	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ.	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	१	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	२	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	२	२	४

१ वर्ण गुण वर

वर्ण	ब्र.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्य गुण । वर

वश्य	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	॥	०	१
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ तारा गुण । वर

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

७ गणगुण । वर

गण	देव	मनु.	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ नाडीगुण । वर

नाडी आदि मध्य अन्त्य	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

५ ग्रह मैत्री चक्रम्

ग्रहः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

६ राशिकूट-चक्रम्

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

वर-कन्या गुणैव्यबोधक-चक्रम् (१)

वर

राशि	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
नक्षत्र - चरण	हृ	हृ	हृ	हृ	हृ	हृ
अश्विनी-चू चे चो ला	२८	२१	१८	२१	२६	११
भरणी-ली लू ले लो	३४	२९	२६	२३	२८	२१
कृत्तिका-१-अ	२०	१६	१९	२०	२१	१५
कृत्तिका-३-इ उ ए	१८	१९	१८	२२	२३	२१
रोहिणी-ओ वा जी वु	२३	१९	२३	२७	२८	२६
मृगशीर्ष-वे वो	२२	१५	२०	२६	२७	२७
मृगशीर्ष-का की	२७	१९	२३	२३	२४	२९
आर्द्रा-कु घ ङ छ	१९	२९	२८	२३	२४	२७
पुनर्वसु-३-के को हा	१९	२२	२४	२३	२४	२७
पुनर्वसु-१-ही	२१	२३	१९	२८	२९	२८
पुष्य-हु हे हो डा	३०	२३	१८	२७	२८	२७
आश्लेषा-डी दू डे डो	२५	१९	१९	२८	२९	२८
मघा-मा मू मे	२९	१७	२२	२८	२९	२८
पूर्वा.फा.-मोटाटी दू	२७	१९	२०	२७	२८	२७
उत्तरा.फा.-१-टे	१८	२२	२३	२७	२८	२७
उत्तरा.फा.-३-लो पा पी	१३	२९	२३	२८	२९	२८
हस्त-पू प ण ठ	१९	२०	२३	२८	२९	२८
चित्रा-२-पे पो	१३	१९	२६	२०	२१	२७

[28]

वर-कन्या गुणैव्यबोधक-चक्रम् (२)

राशि	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
नक्षत्र - चरण	हृ	हृ	हृ	हृ	हृ	हृ
चित्रा-२-रा री	२२	२३	२०	२२	२६	२०
स्वाती-रु रे रो ता	२७	१८	२६	२८	२७	२९
विशाखा-३-ती तू ते	२२	१७	२१	२२	२३	२७
विशाखा-१-तो	१६	१९	१८	१९	२०	२८
अनुराधा-न नी नू ने	२३	२४	२१	२६	२७	२९
ज्येष्ठा-नो या यी यू	१२	२४	२३	२०	२१	२७
मूल-ये यो भा भी	१२	२०	१९	१८	१९	२७
पूर्वाषाढा-भू	२६	१९	२७	२३	२४	२९
घ फ ढ	२७	२०	२६	२३	२४	२९
उत्तराषाढा-भे	२५	१८	२६	२३	२४	२९
उत्तराषाढा-३-भो ज जी	२८	१६	२२	२७	२८	२९
श्रवण-१-खी खू	२८	१७	२१	२७	२८	२९
श्रवण-२-खे खो	२७	१६	२०	२६	२७	२९
घनिष्ठा-२-या गी	२०	१०	१७	२२	२३	२७
घनिष्ठा-२-गू गे	२०	११	२०	१८	१९	२७
शतभिषा-गो सा सी सू	१५	२१	१०	१५	१६	२७
पूर्वाभाद्र-३-से सो दा	१८	२५	१७	२३	२४	२७
पूर्वाभाद्र-१-दी	१४	२९	१८	२५	२६	२७
उत्तराभाद्र-१-यू झ ज	२४	१५	२७	२३	२४	२७
रेवती-दे दो चा ची	२५	२४	२६	२३	२४	२७

[29]

वर-कन्या गुणैक्यबोधक-चक्रम् (३)

[illegible]

वर-कन्या गुणैक्यबोधक-चक्रम् (४)

[illegible]